डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, दिसम्बर, 2020
वर्षः 04, अंक–02

आय एवं संपत्ति का वितरण समान करना होगा : प्रो0 वर्मा 03

स्वच्छता अभियान में सभी शिक्षकों की सहभागिता होनी चाहिए : कुलपति 04

भारतीय संविधान की प्रस्तावना लोकतांत्रिक व्यवस्था का मूल आधार हैः कुलपति

26 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में राष्ट्रीय संविधान दिवस का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि आज का दिन भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। गहन आत्म मंथन के उपरांत निर्मित भारतीय संविधान दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान है। दुनिया के कई लोकतांत्रिक देशों के संवैधानिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करने के उपरांत भारतीय संविधान निर्माताओं ने इसे तैयार किया। भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को सम. ानता एवं धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार तथा मौलिक अधिकारों का समावेश, भारतीय संविधान की मुख्य विशेषता है।

कुलपति ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की संवैधानिक व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित किया जाना सभी भारतवासी के लिए गर्व का विषय है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना लोकतांत्रिक व्यवस्था का मूल आधार है। संविधान, मूल सिद्धान्तों या स्थापित मूल्यों का एक समुच्चय है, जिससे कोई राज्य या अन्य संगठन अभिशासित होते हैं। यह किसी संस्था को प्रचालित करने के लिये बनायी गयी संहिता है। यह प्रायः लिखित रूप में होता है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधि

संकायाध्यक्ष डॉ0 अशोक कुमार राय ने कहा कि मूल्यों के संरक्षण के लिए शिक्षण संस्थाओं में भारतीय संविधान में विधायिका, न्याय पालिका, संविधान की उद्देशिका को पठन–पाठन में कार्यपालिका और व्यवस्थापिका का स्पष्ट रूप लागू किया जाना चाहिए। से वर्णन है। संवैधानिक मूल्यों के संरक्षण के लिए न्याय पालिका सक्रिय रहती है। संविधान का सही क्रियान्वयन विधायिका एवं कार्यपालिका करती है। डॉ0 राय ने बताया कि संवैधानिक

कार्यक्रम में भारत सरकार द्वारा गुजरात के स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में आयोजित कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया, जिसमें देश के राष्ट्रपति के द्वारा राष्ट्र को उद्बोधित किया गया और सभी को संविधान की प्रस्तावना की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में ही डॉ0 अशोक कुमार राय द्वारा विधि पर लिखित पुस्तक का विमोचन कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने किया।

इस अवसर कुलसचिव उमानाथ, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 एस0एस0 मिश्र डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र, डॉ0 विनय मिश्र, डॉ0 आर0एन0 पाण्डेय, डॉ0 त्रिलोकी यादव डॉ0 अनुराग पाण्डेय, डॉ0 अनिल विश्वा, डॉ0 महेन्द्र पाल सिंर्ह सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राओ कीं उपस्थित रही।

भारतीय संविधान स्वतंत्रता, जागृति एवं क्रांति का प्रतीक हैः न्यायाधीश

26 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संविधान दिवस के अवसर पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने संविधान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत में संविधान के माध्यम से विधि की स्थापना हुई है। संविधान का उद्देश्य लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है। प्रारम्भिक काल में कई राष्ट्रों ने लोकतंत्र को अंगीकृत किया था परन्तु वहां लोकतंत्र सफल नहीं हो सका। भारत के संदर्भ में लोकतांत्रिक संस्थाएं सफल होने के साथ–साथ सशक्त हुई हैं। कुलपति ने बताया कि संवैधानिक मूल्यों के प्रति सभी नागरिकों की सजगता निरन्तर बनी रहे, इसी उद्देश्य से संविधान दिवस का आयोजन किया जा रहा है। कुलपति ने कहा कि संवैधानिक मूल्य राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगे, तभी सशक्त भारत की परिकल्पना साकार हो पायेगी।

वेबिनार के मुख्य अतिथि उच्च न्यायालय, इलाहाबाद के लखनऊ पीठ के सेवानिवृत्त न्यायाधीश पी0के0 श्रीवास्तव ने संविधान की उद्देशिका को सभी भारतवासी के लिए महत्वपूर्ण ग्रंथ के रूप में स्वीकार करने पर बल दिया। कहा कि भारतीय संविधान में सर्वे भवन्तु सुखिनः .. की भावना भारतीय संविधान में प्रतिबिम्बित होती है। उन्होंने बताया कि धर्म निरपेक्षता की अवधारणा भारत के संदर्भ में नई नहीं है। भारतीय संविधान की उद्देशिका में पंथनिरपेक्ष शब्द 42 वें संविधान संसोधन के माध्यम से जोड़ा गया है। समता मूलक समाज भारतीय संविधान की आत्मा है। भारत संविधान में सभी नागरिकों को समान रूप से अवसर मिले। यही संविधान का प्रमुख उद्देश्य है। भारतीय संविधान स्वतंत्रता, जागृति एवं क्रांति का प्रतीक है।

कार्यक्रम में विधि संकायाध्यक्ष डॉ0 अशोक कुमार राय ने बताया कि भारतीय संविधान धार्मिक ग्रंथ की तरह है, इसके प्रत्येक शब्द आत्मसात् करने के योग्य है। उन्होंने विधि के शासन, शक्ति के पृथक्करण, नैसर्गिक न्याय एवं न्यायिक पुनरावलोकन के सिद्धांतों को भारतीय संविधान की मूलभूत आत्मा बताया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की वंदना के साथ किया गया। उसके उपरांत कुलगीत की प्रस्तुति की गई। वेबिनार का संचालन अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव द्वारा किया गया। इस अवसर कुलसचिव उमानाथ, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ0 त्रिभुवन शुक्ल, डॉ0 अजय कुमार सिंह, डॉ0 के0 के0 वाजपेयी, डॉ0 संतोष कुमार पाण्डेय, डॉ0 शैलसुता एवं शाम्भवी मुद्रा शुक्ला सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, प्रतिभागी एवं छात्र–छात्राएं ऑनलाइन जुड़े रहे।

एनसीसी कैडेट्स ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस मनाया

07 दिसम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में एन0सी0सी0 यूपी 10/65 वीं बटालियन के कैडेटस् द्वारा सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर शिक्षकों सहित अन्य को झंडा लगाया एवं सभी से स्वैच्छिक दान प्राप्त किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कैडेटस् को प्रोत्साहित करते हुए कि आज का दिन सेना के प्रति सम्मान प्रकट करने का है। झंडा दिवस उन जांबाज सैनिकों के प्रति एकजुटता दिखाने का दिन है, जो हर वर्ष 07 दिसम्बर को मनाया जाता है। हमें भी अपना योगदान देने की आवश्यकता है ताकि उन शहीद परिवारों को मदद मिल सके। विश्वविद्यालय एन0सी0सी0 यूपी 10/65 वीं बटालियन के एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर डॉ0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने बताया कि इस से प्राप्त धनराशि को जिला सैनिक कल्याण बोर्ड, अयोध्या को भेजा जायेगा। इस मुहिम में सीनियर अंडर ऑफिसर दीपमणि मिश्र, अंडर ऑफिसर रवीन्द्र मिश्र, शुभम त्रिपाठी, आकाश मिश्र, शिव मिश्र, शिवानी पाण्डेय सहित अन्य शामिल रहे।

विश्वविद्यालय में कोविड–19 के प्रोटोकॉल के साथ पठन–पाठन प्रारम्भ

24 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय ने राज्य सरकार के कोविड–19 के प्रोटोकॉल में कक्षाओं का संचालन प्रारम्भ हो गया। परिसर के आवासीय परिसर एवं आई0ई0टी0 में कोविड प्रोटोकॉल के तहत कक्षाएं संचालित की गई। कक्षाओं में छात्र–छात्राओं की उपस्थिति लगभग 40 प्रतिशत रही।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशकर सिंह के निर्देश पर कक्षाएं संचालित होने के पहले ही परिसर के सभी विभागों को सैनेटाइज कर दिया गया था। विभिन्न विभागों के शिक्षकों ने अपनी कक्षाओं में बैठाने से पूर्व छात्रों को सेनेटाइजर एवं मास्क अनिवार्य रूप से लगाये रखने का निर्देश प्रदान किया और संक्रमण से बचने के लिए शारीरिक दूरी के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए कहा। छात्र–छात्राओं को किताबें, नोटबुक या अन्य स्टेशनरी को एक दूसरे से साझा न करने की सलाह दी गई है।

कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह द्वारा पूर्व की बैठक में सभी अधिकारियों, संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों एवं समन्वयकों को 23 नवम्बर, 2020 से परिसर में भौतिक रूप से कक्षाएं संचालित करने के लिए दिशा–निर्देश प्रदान किए गए थे। इसी क्रम में सभी विभागों में कोविड–19 के प्रोटोकाल के अनुपालन के साथ कक्षाएं संचालित की गईं। मुख्य परिसर में आने वाले विद्यार्थियों की थर्मल स्केनिंग की गई, उसके उपरांत ही परिसर में प्रवेश दिया गया। कुलपति ने शिक्षकों से कहा कि छात्रों को कोविड–19 से उबरने के लिए मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर जोर देकर उनकी काउंसिलिंग की जाए। मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने बताया कि कोविड के अनुपालन में संक्रमण से बचने के लिए भीड़ न जुटने पाये इसके लिए भी विश्वविद्यालय सतर्क है। इसके साथ ही परिसर में बिना मास्क के प्रवेश वर्जित है।

कोविड–प्रोटोकॉल के अनुपालन को सुनिश्चित कराने के लिए विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने बताया कि समूचे परिसर को संक्रमण से बचने के लिए नियमित अंतराल पर सेनेटाइज कराया जा रहा है। इसके लिए सम्बन्धित को दिशा–निर्देश प्रदान कर दिया गया है। यदि कोई भी संक्रमित शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं पाई जाती है, इसकी सूचना तत्काल उपलब्ध कराने के लिए सभी विभागाध्यक्षों को पहले ही जारी की जा चुकी है।

महिला साक्षरता एवं स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरतः डॉ0 भारती

17 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रिवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा मिशन शक्ति अभियान के तहत 'नारी सुरक्षा, नारी सम्मान एवं स्वावलंबन' विषय पर एक वेबिनार आयोजित किया गया।

वेबिनार को संबोधित करते हुए जय नरायण पीजी कॉलेज, लखनऊ की अर्थशास्त्र की विभागाध्यक्ष डॉ0 भारती पाण्डेय ने कहा कि महिला साक्षरता एवं स्वास्थ्य पर वर्तमान परिवेश में ध्यान देने की आवश्यकता है तभी राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित रह सकेगा। समाज में महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अपराध बेहद चिंताजनक है। इस पर प्रभावी रूप से रोक लगाने की आवश्यकता है। घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, बलात्कार जैसी घटनाएं सामाजिक विचारधारा पर प्रश्न खड़ा करती हैं। सभ्य समाज में इस तरह की घटनाओं के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। भारत एक प्राचीन संस्कृति की विरासत वाला देश है। प्राचीन काल से ही स्त्री शिक्षा एवं उनके सम्मान को बड़ा महत्व दिया जाता रहा है। अंत में उन्होंने प्रदेश के मिशन शक्ति अभियान की तारीफ की और कहा कि इससे महिलाएं एवं बालिकाओं को काफी हद तक जागरूक हो सकेगी।

वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने बताया कि महिलाएं सशक्त होंगी तो समाज सशक्त होगा। इसलिए महिलाओं एवं बालिकाओं के आत्मसम्मान के लिए समाज को आगे आना होगा। कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने छात्राओं को शपथ दिलाई।

इस वेबिनार का संचा–लन एवं धन्यवाद ज्ञापन सेल की सदस्य मनीषा यादव ने किया। इस अवसर पर शिक्षकों सहित छात्राएं ऑनलाइन जुड़ी रही।

मंथन

15 दिसम्बर, 2020: पौष, शुक्ल पक्ष, तृतीया, विक्रम संवत् 2077

"खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है"

लोकतांत्रिक समाज एवं संविधान

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के प्रकरण ने लोकतंत्र शब्द की अवधारणा को नए आयाम प्रदान किए है। आज राजनीतिक गलियारे में सर्वाधिक इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों में से यह एक है। यह ऐसी अवधारणा है, जो अपनी बहुआयामी अर्थों के कारण समाज और मनुष्य के जीवन के बहुत से सिद्धांतों को प्रभावित करता है। लोकतांत्रिक प्रणाली का कोई विकल्प भी नहीं है, शासन की वर्तमान प्रणालियों में इसकी श्रेष्ठता बरकरार है। यह बात उन देशों या लोकतंत्र के लिए सच साबित होती है जहां इस प्रणाली के सभी मानकों को वास्तविक रूप से लागू किया या अपनाया जाता है। दुनिया के ज्यादातर देश कहने के लिए लोकतंत्र होने का दम तो भरते हैं लेकिन हैं नहीं। एक लोकतंत्र की सभी गुण दशाएं वहां अनुकूल नहीं होती हैं। ऐसे में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की सभी दशाओं को समृद्ध करना या फिर शासन की नई प्रक्रिया अपनाना सभ्य समाज के लिए सबसे बड़ा उत्तरदायित्व है। सामाजिक आदर्श के रूप में लोकतंत्र वह समाज है जिसमें कोई विशेषाधिकारयुक्त वर्ग नहीं होता और न ही जाति, धर्म, वर्ण, वंश, धन, लिंग आदि के आधार पर व्यक्ति व्यक्ति के बीच भेदभाव किया जाता है। संविधान को लोकतांत्रिक राज्य का आधार कहा जाता है। नैतिक आदर्श एवं मानसिक दृष्टिकोण के रूप में लोकतंत्र का अर्थ मानव के रूप में मानव व्यक्तित्व में आस्था है। क्षमता, सहिष्णुता, विरोधी के दृष्टिकोण के प्रति आदर की भावना, व्यक्ति की गरिमा का सिद्धांत ही वास्तव में लोकतंत्र का सार है। लोकतांत्रिक आदर्शों की स्थापना के लिए कई उपादानों का आविर्भाव हुआ है, लिखित संविधानों द्वारा मानव अधिकारों की घोषणा, वयस्क मताधिकार प्रणाली द्वारा प्रतिनिधि चुनने का अधिकार, स्थानीय स्वायत्त शासन का विस्तार, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष न्यायालयों की स्थापना, विचार, भाषण, मुद्रण तथा आस्था की स्वतंत्रता को मान्यता, विधिसम्मत शासन को मान्यता देना है। वयस्क मताधिकार के युग में लोकमत को शिक्षित एवं संगठित करने, सिद्धांतों के सामान्य प्रकटीकरण, नीतियों के व्यवस्थित विकास तथा प्रतिनिधियों के चुनाव के सहायक होने में राजनीतिक दलों की उपादेयता – आधुनिक लोकतंत्र का एक वैशिष्ट्य है। संवैधानिक प्रावधानों के कारण ही जनसेवा के व्यापक क्षेत्र में पदार्पण करने के लिए भारतीय लोकतंत्र को लोक कल्याणकारी राज्य का आदर्श ग्रहण करना पड़ा है।

सतत विकास के लिए बहुत जरूरी है पर्वतों का संरक्षण

रजनीश पाण्डेय

पहाड़ों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने, अवसरों पर ध्यान केंद्रित करने और पहाड़ों के विकास पर जोर डालने के लिए हर साल 11 दिसंबर को पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय पर्वतीय दिवस हर साल एक विशेष थीम के साथ मनाया जाता है। बर्फ से ढके हिमालय से लेकर हरे–भरे पहाड़ों तक, हर एक अपने तरीके से खास है और अनेकानेक पशु–पक्षियों का घर है। संयुक्त राष्ट्र की वेबसाइट के अनुसार, पहाड़ पर पूरी दुनिया की आबादी का 15 प्रतिशत हिस्सा आश्रित है और पहाड़ ही दुनिया की जैव विविधता के आधे हिस्से की मेजबानी करते हैं। पूरे विश्व की आधी जनसंख्या को ताजा पानी पहाड़ों से ही मिलता है। इनके महत्व का रेखांकन करते हुए संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास के 15 लक्ष्यों में पर्वत संरक्षण को शामिल किया है। अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस दिन का उद्देश्य पहाड़ों के संरक्षण और इसकी समृद्ध जैव विविधता के बारे में जागरुकता बढ़ाना है। लोग इस दिन को हैप्पी इंटरनेशनल माउंटेन डे की शुभकामना देकर बड़ी खुशी से मनाते हैं।

यह दिन पर्यावरण में पहाड़ों की भूमिका और जीवन पर इसके प्रभाव को समझने के लिए लोगों को शिक्षित करता है। अंतरराष्ट्रीय पर्वत संरक्षण की दिशा में 1992 में वैश्विक स्तर प्रथम प्रयास किया गया, जब पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में एजेंडा 21 के अध्याय 13 के 'संकटग्रस्त पारिस्थितिकी तंत्र का प्रबंधः सतत पर्वत विकास' को अपनाया गया। संयुक्त राष्ट्र के इस कदम ने पहाड़ों के विकास के इतिहास को एक नया रूप दिया है। पहाड़ के महत्व को देखते हुए, संयुक्त राष्ट्र महासभा

ने 2002 को संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय पर्वत वर्ष घोषित किया और 2003 से 11 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस के रूप में नामित किया। तब से हर साल यह एक विशेष विषय के साथ मनाया जाता है।

इस वर्ष के अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस का विषय 'पर्वतीय जैव विविधता' है। पहाड़ों पर पाई जाने वाली समृद्ध जैव विविधता का जश्न मनाने और उन खतरों का सामना करने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा ये विषय तय किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाने के पीछे मुख्य कारण यह है कि बहुत सारे लोगों का जनजीवन पर्वतों से जुड़ा है। विकास सभी के लिए जरूरी है किन्तु ध्यातव्य है कि पर्वतीय क्षेत्रों में विकास भी होता रहे और इन इलाकों में पर्यावरण संरक्षण का भी ध्यान रहे। पर्वत दिवस पर विभिन्न माध्यमों से कार्यक्रम, सेमिनार या कांफ्रेंस आयोजन किया जाता है।

पर्वत प्रकृति की सबसे सुंदर संरचनाओं में से एक हैं। जल चक्र में पर्वत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, पहाड़ों में जमी हुई बर्फ से ही वसंत और गर्मियों के मौसम में पिघल जाती है और बस्तियों, कृषि और उद्योगों के लिए आवश्यक पानी मिलता है। वास्तव में, अर्ध–शुष्क और शुष्क क्षेत्रों में, लगभग 90 नदियां पहाड़ों से ही तो आती हैं। विकासशील देशों में ईंधन के लिए अभी भी लकड़ी पर ही निर्भरता है, जो पहाड़ों पर स्थित जंगलों से ही मिलती हैं। पहाड़ की पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रत्येक वर्ष 11 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस को मनाने के लिए पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले, पर्वतों से जुड़े रोजगार करने वाले लोगों, पर्वतारोहियों तथा सामाजिक संस्थाओं में बहुत ज्यादा उत्साह होता है। पहाड़ों के बिना दुनिया अधूरी है, ये पहाड़ ही हैं जो हमारी सीमाओं की रक्षा भी करते हैं और अपनी खूबसूरती, ऊंचाईयों, जैव विविधता एवं हरियाली से हर किसी का मन भी मोह लेते हैं।

भारतीय नौसेना का है गौरवशाली इतिहास

साक्षी श्रीवास्तव

भारत में प्रत्येक वर्ष 4 दिसंबर को नौसेना दिवस मनाया जाता है। नौसेना ने भारत की तटीय सीमाओं की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय जल सीमा की सुरक्षा की जिम्मेदारी निभा रही भारतीय नौसेना की शुरुआत, 5 सितंबर 1612 को हुई थी, जब ईस्ट इंडिया कंपनी के युद्ध पोतों का पहला बेड़ा सूरत बंदरगाह पर पहुंचा था और 1934 में 'रॉयल इंडियन नेवी' की स्थापना हुई थी।

भारतीय नौसेना दिवस का इतिहास 1971 के ऐतिहासिक भारत–पाकिस्तान युद्ध से जुड़ा है, जिसमें भारत ने पाकिस्तान पर न केवल विजय हासिल की थी, बल्कि पूर्वी पाकिस्तान को आजाद कराकर नवीन राष्ट्र 'बांग्लादेश' का दर्जा दिलाया था। भारतीय नौसेना अपने इस गौरवमयी इतिहास की याद में प्रत्येक साल 4 दिसंबर को नौसेना दिवस मनाती है। आधुनिक भारतीय नौसेना की नींव 17वीं शताब्दी में रखी गई थी, जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने एक समुद्री सेना के बेड़े के रूप में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। यह बेड़ा 'द ऑनरेबल ईस्ट इंडिया कंपनीज मरीन' कहलाता था। बाद में यह 'द बॉम्बे मरीन' कहलाया। पहले विश्व युद्ध के दौरान नौसेना का नाम 'रॉयल इंडियन मरीन' रखा गया। 26 जनवरी 1950 को भारत गणतंत्र बना और इसी दिन भारतीय नौसेना ने अपने नाम से 'रॉयल' को त्याग दिया। उस समय भारतीय नौसेना में 32 नौ–परिवहन पोत और लगभग 11,000 अधिकारी और नौसैनिक थे। आजादी के समय भारत के नौसैनिक बेड़े में पुराने युद्धपोत थे। आईएनएस 'विक्रांत' भारतीय नौसेना का पहला युद्धपोत था, जिसे 1961 में सेना में शामिल किया गया था। बाद में 1986 में, आईएनएस 'विराट' को नौसेना में शामिल किया गया। 1961 में नौसेना ने गोवा को पुर्तगालियों से स्वतंत्र करने में थल सेना की मदद की थी।

भारतीय नौसेना ने जल सीमा में कई बड़ी कार्रवाईयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय नौसेना ने देश की सीमा रक्षा के साथ–साथ संयुक्त राष्ट्र द्वारा शांति कायम करने की विभिन्न कार्यवाहियों में भारतीय थल सेना सहित भाग लिया। सोमालिया में संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्रवाई इसी का एक हिस्सा थी। वर्तमान में भारतीय नौसेना का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है और यह मुख्य नौसेना अधिकारी 'एडमिरल' के नियंत्रण में होता है। भारतीय नौ सेना तीन क्षेत्रों की कमान (पश्चिम में मुंबई, पूर्व में विशाखापत्तनम और दक्षिण में कोच्चि) के तहत तैनात की गई है, जिसमें से प्रत्येक का नियंत्रण एक फ्लैग अधिकारी द्वारा किया जाता है।

ऊर्जा संरक्षण में तकनीक और जागरूकता की अहम भूमिका

सौरभ सिंह

ऊर्जा का उपयोग व आपूर्ति समाज की मूलभूत आवश्यकता है। ऊर्जा की जरूरत की वजह से ही मानव द्वारा पर्यावरण को सर्वाधिक प्रभावित किया है। प्रकृति में संसाधन सीमित हैं, दूसरे शब्दों में, प्रकृति में उपलब्ध ऊर्जा सीमित है। विश्व की बढ़ती जनसंख्या के साथ आवश्यकताएँ भी बढ़ती ही जा रही हैं । मनुष्य की मशीनों पर निर्भरता भी धीरे–धीरे बढ़ती जा रही है । आज इन समस्याओं ने वैश्विक रूप धारण कर लिया है। ऐसी समस्याएँ आज प्रमुख राजनैतिक मुद्दों व अन्तरराष्ट्रीय वाद–विवाद और नियमन का विषय बन गई हैं। वैश्विक ऊर्जा संसाधनों के निष्कर्षण तथा ऊर्जा उपभोग के प्रतिकूल पर्यावरणीय प्रभावों के प्रति बढ़ती हुई जागरूकता के कारण, ऊर्जा की खपत कम करने वाले यन्त्रों व तकनीकों को विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। जिससे ऊर्जा व्यय व पर्यावरणीय संकट को कम किया जा सके।

सम्पूर्ण विश्व में ऊर्जा संरक्षण एक बहुत ही संवेदनशील विषय है। ऊर्जा संरक्षण के लिए सामुदायिक स्तर पर ऐसी परियोजनाओं का प्रयोग किया जाना चाहिए, जो उचित, नवीकरणीय सौर तकनीकों से सम्बन्धित हो। ऊर्जा सेवाओं की कम खपत और ऊर्जा के कुशल प्रयोग द्वारा ऊर्जा को संरक्षित किया जा सकता है। ऊर्जा के उपभोग को कम करके भी समान परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। हम ऊर्जा संरक्षण हेतु नई तकनीकों, ऊर्जा कुशल उपकरणों व प्रक्रियाओं का प्रयोग कर सकते हैं। पुरानी व अधिक ऊर्जा की खपत करने वाली प्रक्रियाओं को नई ऊर्जा कुशल प्रक्रियाओं से प्रतिस्थापित कर के भी ऊर्जा संरक्षण किया जा सकता है।

आजकल रोशनी हेतु ऊर्जा की खपत को कम करने में सी. एफ. एल. और एल. ई. डी. लाइट का प्रयोग काफी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। शिक्षा ऊर्जा संरक्षण हेतु जागरूकता उत्पन्न करने का सबसे अच्छा उपाय है। ऊर्जा संरक्षण की ओर एक ज्ञानपूर्ण दृष्टिकोण निवासियों को कम वाहन चलाने और पैदल चलने हेतु प्रोत्साहित करेगा। अधिक खपत वाले संयंत्रों का पता लगाकर ऊर्जा संरक्षण के अवसरों को तलाशा जा सकता है। उदाहरण के लिये एक कारखाने के कर्मचारियों को ऊर्जा की बचत करने वाले उपकरणों के प्रयोग हेतु प्रशिक्षित किया जा सकता है। साथ ही उन्हें ऊर्जा संरक्षण की आवश्यकता हेतु भी सतर्क किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पेट्रोल अथवा डीजल जैसे संसाधनों रहित विश्व की परिकल्पना भी दुष्कर प्रतीत होती है। परन्तु वास्तविकता यही है कि जिस तेजी से हम इन संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं, उसे देखते हुए वह दिन दूर नहीं, जब धरती से ऊर्जा के हमारे ये संसाधन विलुप्त हो जाएँगे। जहाँ तक भारत की स्थिति है, हमारे देश में पेट्रोलियम ऊर्जा का एक बड़ा भाग खाड़ी के तेल उत्पादक देशों से आयात किया जाता है। यह जरूरी है कि हम ऊर्जा संरक्षण के साथ वैकल्पिक ऊर्जा की ओर विशेष ध्यान दें।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति से विश्वविद्यालय के गतिविधियों की जानकारी होती है। प्रेस परिषद, दीपावली और विश्व टेलीविजन दिवस पर लेख बेहद रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगे।

–आरती तिवारी

सुविचार

उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।

–स्वामी विवेकानन्द

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह, कुलपति
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
रजनीश, सौरभ एवं साक्षी

Feedback

avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

शिक्षकों में सतत सीखने की प्रवृत्ति जरूरी : कुलपति

02 दिसम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में रीस्किलिंग ऑफ टीचर्स प्रोग्राम के तहत विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय के शिक्षकों को प्रदेश सरकार के आदेश पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत ऑनलाइन शिक्षा से संबंधित ई–कंटेंट तैयार किए जाने संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम 02–07 दिसम्बर, 2020 तक ई0डी0पी0 भवन स्थित कम्प्यूटर लैब में किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी शिक्षकों में सतत सीखने की प्रवृत्ति जरूरी है। जीवनपर्यन्त शिक्षक कहीं न कहीं किसी न किसी से सीखता रहता हैं। कुलपति ने बताया कि नई शिक्षा नीति 2020 के कियान्वयन में सभी शिक्षकों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे ज्ञान के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए डिजीटल माध्यमों का अधिक से अधिक प्रयोग करें। छात्रोपयोगी जानकारी के लिए उच्च कोटि के गुणवत्तापरक ई–कंटेंट तैयार करें।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में पूर्व प्रतिकुलपति प्रो0 एस0एन0 शुक्ला ने नई शिक्षा नीति के विभिन्न आयामों पर बोलते हुए कहा कि आने वाले समय में 20 प्रतिशत कोर्स को आनलाइन माध्यमों से ही पूर्ण करने का दायित्व शिक्षकों का होगा।

कार्यक्रम के दूसरे दिन आज 03 दिसम्बर, 2020 को आई0क्यू0ए0सी0 के निदेशक डॉ0 नरेश कुमार चौधरी ने शिक्षकों को एम0एस0 वर्ड एवं ओपेन आफिस के माध्यम से ई–कंटेंट के तैयार किए जाने का प्रशिक्षण दिया। उन्होने बताया कि कोविड–19 के कारण ई–कटेंट विद्यार्थियों के लिए आवश्यकता बन गई है। इन टूल्स का उपयोग कर छात्रोपयोगी ई–कंटेंट तैयार किया जा सकता है।

प्रोग्राम के तीसरे दिन 04 दिसम्बर को मुख्य वक्ता अवध विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभागाध्यक्ष प्रो0 शैलेन्द्र कुमार ने ई–कटेंट के निर्माण में एम0एस0 एक्सेल एवं ओपेन आफिस की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिक्षकों को बताया कि एम0एस0 एक्सेल का प्रयोग करके ई–कटेंट का निर्माण किया जा सकता है। इसके माध्यम से डेटा एनालिसिस एवं प्रजेंटेशन आडियन्स तक पहुंचाई जा सकती है। प्रो0 कुमार ने बताया कि सांख्यिकी विश्लेषण के लिए एम0एस0 एक्सेल एक उपयोगी साफ्टवेयर है। जिसकी मदद से सारिणी एवं ग्राफिक्स का निर्माण आसानी किया जा सकता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के चौथे दिन 05 दिसम्बर, 2020 को मुख्य विशेषज्ञ लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के डिर्पाटमेंट आफ कम्प्यूटर साइंस के डॉ0 पुनीत मिश्रा ने शिक्षकों को वीडियो एडिटिंग एवं यू–ट्यूब के विभिन्न प्रयोगों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि यू–ट्यूब पर अपना चैनल बनाकर अपने शैक्षणिक वीडियो अपलोड कर ऑनलाइन एवं लाइव किया जा सकता है। इसके साथ ही डॉ0 मिश्र ने यू–ट्यूब पर ऑनलाइन क्लासेस अपलोड करना, लाइव ऑनलाइन क्लासेस देना, वीडियो एडिट करना आदि का भी लाइव डिमॉन्सट्रेशन किया। कार्यक्रम में डॉ0 मिश्र ने शिक्षकों की विभिन्न शंकाओं का समाधान भी किया।

07 दिसमबर, 2020 को सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, राजस्थान के डॉ0 अजय इण्डियन ने गूगल के विभिन्न एप्प से शिक्षकों को परिचित कराया। जिसमें गूगल कीप, आटोड्रा, गूगल डॉक्स, गूगल गेम्स, गूगल क्लासरुम इत्यादि है। डॉ0 अजय ने बताया कि ई–कटेंट निर्माण में इस प्रकार के एप्प बहुत ही उपयोगी होते है। इसका प्रयोग करके ई–कटेंट में नवीनता लाई जा सकती है। इसके साथ ही उन्होंने स्क्रीन पर प्रदर्शन करके आनलाइन जुड़े शिक्षकों को प्रशिक्षित किया।

इसी क्रम में विवि के आईईटी कम्प्यूटर साइंस के ई0 चंदन अरोड़ा ने शिक्षकों को माइक्रोसाफट पॉवर प्वाइंट, इमेज एडीटिंग, एनीमेशन के बारे में हैण्ड्सऑन ट्रेनिंग प्रदान किया। उपस्थित शिक्षकों ने इस संबंध में ई0 चंदन अरोड़ा से अपनी विभिन्न शंकाओं का समाधान भी प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन आईक्यूएसी के निदेशक डॉ0 नरेश चौधरी ने किया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 अभिषेक सिंह द्वारा किया गया।

आय एवं संपत्ति का वितरण समान करना होगा : प्रो0 वर्मा

05 दिसम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के अम्बेडकर चेयर, अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग तथा ललित कला विभाग के संयुक्त तत्वावधान में बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के 64वें महापरिनिर्वाण दिवस की पूर्व संध्या पर व्याख्यान एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। व्याख्यान कार्यक्रम के अन्तर्गत शीर्षक 'डॉ0 अम्बेडकर का आर्थिक चिन्तन एवं विपन्न समूह' रहा तथा पोस्टर प्रतियोगिता का शीर्षक 'सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान' रहा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के पूर्व कुलपति प्रो0 एन0 एम0 पी0 वर्मा ने कहा कि आज भी समाज का विपन्न वर्ग अपने विकास एवं जीवन स्तर में सुधार को लेकर व्याकुल एवं व्यथित है। आज भी समाज की अधिकांश संपत्तियां कुछ लोगो के हाथों में फँसी हुई है, यदि हम आर्थिक विषमता को दूर करना चाहते हैं, तो हमें आय एवं संपत्ति का वितरण समान करना होगा जिससे समाज का विपन्न वर्ग चाहे वो जिस भी जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय का हो, जीवन स्तर ऊँचा उठा सकता हैं। यही बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के लिये सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कला संकायाध्यक्ष प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने कहा कि डॉ0 अम्बेडकर निरंतर से ही समाज के विपन्न वर्ग के लिये संघर्ष करते रहे। उनका निरंतर यह प्रयास रहा है, कि समाज में आर्थिक समानता में वृद्धि होनी चाहिए तथा समाज का कोई भी व्यक्ति भूखा, नंगा एवं कुपोषित ना रहे।

अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास के विभागाध्यक्ष प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए ये बताया कि कोविड–19 महामारी के कारण आज समाज का अधिकांश विपन्न वर्ग बेकारी, भुखमरी एवं विकास के निम्नता की स्थिति को झेल रहा हैं। आज हम लोगो की नैतिक जिम्मेदारी बनती हैं की हम बाबा साहब के आर्दशों के अनुरूप आर्थिक उन्नयन का प्रयास करें, जिससे संपूर्ण समाज का विकास सुनिश्चित हो सके। प्रो0 श्रीवास्तव ने बताया कि कुलपति आचार्य रविशंकर सिंह के नेतृत्व में अम्बेडकर चेयर तथा अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग विपन्न वर्ग से सम्बन्धित गाँव को चिन्हित करते हुए 'आत्मनिर्भर भारत के अन्तर्गत स्वावलम्बन' के साथ उनके विकास हेतु प्रयास विभाग द्वारा फरवरी 2021 में अम्बेडकर के आर्थिक चिन्तन विषयक राष्ट्रीय अधिवेशन की भी प्रस्तावना तैयार की जा रही हैं।

कार्यक्रम का संचालन डॉ0 सरिता द्विवेदी ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 प्रिया कुमारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो0 राज कुमार तिवारी, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 के0के0 वर्मा, प्रो0 मृदुला मिश्रा, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 संजय चौधरी, डॉ0 प्रिया कुमारी, प्रो0 आर0के0 सिंह, डॉ0 दिवाकर त्रिपाठी, डॉ0 देव नारायण वर्मा, कविता पाठक, डॉ0 अलका श्रीवास्तव, डॉ0 सविता देवी, रीमा सिंह, सरिता सिंह, सुरेन्द्र शर्मा, तिलकराम, शिवशंकर तथा बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित रहीं।

विद्यार्थियों ने नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर विश्वविद्यालय का मान बढ़ाया

02 दिसम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय परिसर के एम0एससी0 पर्यावरण विज्ञान के तीन, एम0एस0सी0 इलेक्ट्रानिक्स के दो एवं अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास की दो मेधावी विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की नेट परीक्षा उत्तीर्ण की है।

पर्यावरण विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल ने बताया कि विभाग के तीन मेधावी छात्रों ने परिश्रम कर नेट परीक्षा को उत्तीर्ण कर विभाग एवं शिक्षकों का मान बढ़ाया है। इसमें पूर्णिमा दुबे, फिजा अकील एवं बृजेश कुमार है। पूर्व के सत्र में भी विभाग की छात्रा फिजा अकील ने विगत दो वर्षों की भाँति इस वर्ष भी नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की है। इस उपलब्धि पर प्रो0 जसवंत सिंह, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 रूद्र प्रताप सिंह, डॉ0 अरविंद कुमार बाजपेयी, डॉ0 संजीव श्रीवास्तव एवं अमित मिश्र सहित अन्य ने हर्ष व्यक्त किया।

विभागाध्यक्ष प्रो0 अनुपम श्रीवास्तव ने बताया कि विभाग के दो छात्र सोनू कुमार एवं आदित्य कुमार शर्मा ने नेट की परीक्षा उत्तीर्ण कर विभाग एवं विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। छात्रों ने इसका श्रेय विभाग के शिक्षकों को दिया। इस उपलब्धि पर प्रो0 आर0के0 तिवारी, प्रो0 एस0एन0 शुक्ल, प्रो0 के0के 0वर्मा, प्रो0 गंगा राम मिश्र, डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव, डॉ0 नरेश चौधरी, डॉ0 अनिल कुमार यादव, डॉ0 सिंघु सिंह एवं अन्य शिक्षकों ने हर्ष व्यक्त किया।

अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास के विभागाध्यक्ष प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि एम0ए0 अर्थशास्त्र की छात्राएं स्तुति गुप्ता तथा श्रेया पांडे ने यू0जी0सी0 नेट परीक्षा–2020 उत्तीर्ण कर विभाग के शिक्षकों का मान बढ़ाया है। विभाग के शिक्षक प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 मृदुला मिश्रा एवं डॉ0 प्रिया कुमारी सहित अन्य ने विद्यार्थियों की उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

एनएसएस के स्वयंसेवकों की चयन प्रक्रिया सम्पन्न

20 नवम्बर। अवध विश्वविद्यालय में गणतंत्र दिवस परेड शिविर–2020 के तहत विश्वविद्यालय स्तर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों की सहभागिता के चयन की प्रक्रिया परिसर के मदन मोहन मालवीय केन्द्रीय पुस्तकालय में सम्पन्न हुई। इसमें विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने प्रतिभाग किया।

चयन प्रक्रिया का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने स्वयंसेवकों की दौड़ को झंडी दिखाकर किया। इस प्रक्रिया में स्वयंसेवकों की ऊंचाई, एवं वजन का मापन, दौड़, ड्रिल आदि सूबेदार गजेन्द्र सिंह एवं हवलदार धर्मवीर सिंह तथा 65 यूपी बटालियन, एन0सी0सी0 की देखरेख में सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता के उपरांत साक्षात्कार एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रतिभाग की प्रक्रिया सम्पन्न हुई। साक्षात्कार एवं सांस्कृतिक गतिविधियां, राष्ट्रीय सेवा योजना क्षेत्रीय निदेशालय लखनऊ के युवा अधिकारी अयोध्या प्रसाद एवं विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक, उमानाथ के निर्देशन में हुई।

इस अवसर पर वित्त अधिकारी धनंजय सिंह, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा, प्रो0 आर0के0 सिंह, डॉ0 मोहन तिवारी, संतोष कौशल, शरीफ अहमद, अरूण प्रताप सिंह, गोवर्धन यादव, डॉ0 बीरबल शर्मा, डॉ0 आराधना श्रीवास्तव तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम के अधिकारी उपस्थित रहे।

सैद्धांतिक के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान जरूरी : डॉ0 सचान

03 दिसम्बर। अवध विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबन्ध एवं उद्यमिता विभाग में एम0बी0ए0 (पर्यटन) एवं एम0बी0ए0 (हॉस्पिटैलिटी) के छात्रों को रोजगार के अवसर एवं उनकी चुनौतियों के सम्बन्ध में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशला के मुख्य वक्ता छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर के होटल एवं पर्यटन प्रबन्धन संस्थान के निदेशक डॉ0 विवेक सचान ने अपने सम्बोधन में छात्रों को बताया कि सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त करना जरूरी है। पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में रोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं, लेकिन व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने छात्रों से कहा कि समय–समय पर उद्योग में प्रशिक्षण भी लेते रहना चाहिए जिससे छात्र अपने को उद्योग के लिए उपयोगी बना सकें।

कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष प्रो0 अशोक शुक्ला ने बताया कि कार्यशाला कराने का प्रयोजन एम0बी0ए0 पर्यटन एवं एम0बी0ए0 हॉस्पिटैलिटी के छात्रों को रोजगार सम्बन्धी जानकारी प्रदान करना है। छात्र रोजगार से सम्बन्धित आने वाली समस्याओं का आसानी से सामना कर सकें।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो0 अशोक शुक्ल एवं प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह द्वारा अतिथि को पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत किया गया। इस कार्यशाला में प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा, डॉ0 राना रोहित सिंह, डॉ0 अंशुमान पाठक, डॉ0 रामजी सिंह, डॉ0 निमिष मिश्रा, डॉ0 आशुतोष पाण्डेय, डॉ0 दीपा सिंह, डॉ0 विवेक उपाध्याय, डॉ0 रवीन्द्र भारद्वाज, डॉ0 अनुराग तिवारी, डॉ0 कपिल देव, डॉ0 आशीष पटेल, डॉ0 अनीता मिश्रा, कविता श्रीवास्तव, संजीत पाण्डेय, प्रवीण राय, सूरज सिंह, डॉ0 श्रीश अस्थाना, जूलियस कुमार, अंकित, दिनेश, आशाराम सहित अन्य मौजूद रहे।

महिलाओं को समान अवसर उपलब्ध कराना समाज की नैतिक जिम्मेदारी : डॉ0 राजश्री

14 दिसम्बर। अवध विश्वविद्यालय के मिशन शक्ति अभियान के तहत वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा 'एनसीसी–ए साईलेन्ट कॉन्ट्रीब्यूशन टू वीमेन इंम्पावरमेंट' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार को संबोधित करती हुई बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ की डॉ0 राजश्री पाण्डेय ने कहा कि नारी सशक्तीकरण देश के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। समाज में महिलाओं के लिए समान अवसर उपलब्ध कराना ही समाज की नैतिक जिम्मेदारी भी है। समाज में महिला उत्पीड़न के लिए स्थान नहीं होना चाहिए। एन0सी0सी0 में बालिकाओं की भागीदारी सामाजिक सशक्तीकरण की देन है। इसे प्रोत्साहन देना होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं के हितों की संरक्षा के लिए मिशन शक्ति अभियान संचालित किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देश पर महिलाओं की सुरक्षा एवं आत्म सम्मान में श्रंखलाबद्ध कार्यक्रम चलाया जा रहा है। कार्यक्रम में अभिभावकों एवं छात्रों को सुरक्षा की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 सरिता द्विवेदी ने और धन्यवाद ज्ञापन सह–समन्वयक डॉ0 सिंधु सिंह ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, डॉ0 महिमा चौरसिया, डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी, निधि अस्थाना, नीलम मिश्रा, वल्लभी त्रिपाठी, सहित बड़ी संख्या में छात्राएं ऑनलाइन जुड़ी रही।

•अवध विश्वविद्यालय के वीमेंस ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल द्वारा मिशन शक्ति अभियान की श्रंखला में 'वीमेन इंम्पावरमेंट थ्रू सेल्फ डिफेंस टेक्निक्स' विषय पर 07 दिसम्बर, 2020 को एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

•अवध विश्वविद्यालय आवासीय परिसर एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों की एम0पी0एड0–प्रथम सेमेस्टर एवं तृतीय सेमेस्टर की मुख्य परीक्षा वर्ष–2020 का परीक्षाफल घोषित।

•अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल द्वारा मिशन शक्ति अभियान के तहत 'आध्यात्मिक साधनों से महिला सशक्तीकरण' विषय पर 23 नवम्बर, 2020 को एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

•अवध विश्वविद्यालय के सम्बद्ध महा–विद्यालयों की एम0ए0 प्रथम वर्ष के हिदी, अंग्रेजी, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान राजनीति शास्त्र, भूगोल तथा संगीत विषयों की मुख्य परीक्षा वर्ष–2020 का परीक्षाफल घोषित।

पी–एच0डी0 सामान्य प्रवेश परीक्षा का परिणाम घोषित

04 दिसम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के पी–एच0डी0 सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीईटी–2020) का परिणाम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देश पर

जारी कर दिया गया है।

यह प्रवेश परीक्षा 08 नवम्बर, 2020 को आयोजित की गयी थी। प्रवेश परीक्षा का परिणाम वेबसाइट http://phdadmission.rmlauentrance.in/ पर उपलब्ध है।

पी–एच0डी0 सामान्य प्रवेश परीक्षा के समन्वयक प्रो० शैलेंद्र कुमार वर्मा ने बताया कि पी–एच0डी0 में प्रवेश के लिए पंजीकृत 4462 अभ्यर्थियों में से प्रवेश परीक्षा के लिए नामांकित 3503 अभ्यर्थियों में से 731 अर्ह पाए गए। नेट, जे0आर0एफ0, एम0फिल0 व अन्य परीक्षा में सफल 1457 को नियमानुसार प्रवेश परीक्षा से छूट प्रदान की गई है। प्रवेश परीक्षा में अर्ह अभ्यर्थियों एवं नेट, जे0आर0एफ0, एम0फिल0 व अन्य उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए औपबंधिक साक्षात्कार पत्र शीघ्र ही वेबसाइट पर जारी किया जाएगा। इस संबंध में सभी अभ्यर्थियों से आग्रह है कि अद्यतन सूचना के लिए उपरोक्त वेबसाइट का अवलोकन करते रहें। कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के दिशानिर्देश पर कोविड–19 के अनुपालन में शीघ्र ही पी–एच0डी0 सामान्य प्रवेश परीक्षा के दूसरे चरण साक्षात्कार का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ० नीलम यादव, डॉ० गीतिका श्रीवास्तव, डॉ० अभिषेक सिंह, डॉ० राजेश सिंह कुशवाहा एवं प्रोग्रामर रवि मालवीय उपस्थित रहे।

परिसर के निर्माणाधीन भवनों का कुलपति ने किया निरीक्षण

28 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने विश्वविद्यालय के नवीन परिसर में नवनिर्मित भवनों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय कुलपति ने भवनों के निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री का बारीकी से अवलोकन किया। इसके साथ ही कार्यदायी संस्था को मानकों के अनुरूप कार्य करने का निर्देश प्रदान किया। कुलपति ने विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ को निर्देश प्रदान करते हुए कहा कि कार्यदायी संस्था निर्धारित समयावधि में मानकों के अनुरूप शीघ्र ही बिल्डिंग का कार्य पूर्ण करें, इसमें लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जायेगी। निरीक्षण के समय विश्वविद्यालय के मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 विनय कुमार मिश्र, डॉ0 शैलेन्द्र कुमार सिंह सहित अन्य उपस्थित रहे।

नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने की जरूरत है : मुख्य नियंता

12 दिसम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के विधि विभाग में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि अवध विश्वविद्यालय के मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने कहा कि मानवाधिकारों के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर मानवाधिकार आयोग का गठन किया गया है किंतु आयोग को केवल परामर्शदात्री अधिकारिता ही प्रदान की गई है। मानवाधिकार सिर्फ पुस्तकों में उल्लिखित कर दिए जाने से लागू नहीं किए जा सकते इसके अनुपालन के लिए समग्र नीति बनानी होगी। उन्होंने मानवाधिकार और नैतिक मूल्यों के संबंध पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने की जरूरत है।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता विधि संकायाध्यक्ष डॉ0 अशोक कुमार राय ने मानवाधिकार की संकल्पना एवं परिभाषा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मानवाधिकार को परिभाषित करने से पूर्व मानव को परिभाषित किया जाना जरूरी है। आतंकवादी, दुराचारी और एक सज्जन व्यक्ति के मानवाधिकार में अंतर करने की आवश्यकता है। दोनों के मानवाधिकार समान नहीं हो सकते। मानवाधिकार एक नैसर्गिक अधिकार है। यह अहस्तांतरणीय है। यह एक अंतर्निहित अधिकार है जो मनुष्य जाति में जन्म लेने मात्र से मनुष्य को प्राप्त होता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे भौतिकी एवं इलेक्ट्रानिक्स विभाग के प्रो0 राजकुमार तिवारी ने मानवाधिकार की संकल्पना पर प्रकाश डालते हुए इसके क्रियान्वयन पर बल दिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ प्रदान कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अजय कुमार सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन पाठ्यक्रम के समन्वयक डॉ0 त्रिभुवन शुक्ला द्वारा किया। इस अवसर पर प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 शैलेंद्र कुमार, डॉ0 अनिल यादव, डॉ0 के0 के0 बाजपेई, डॉ0 संतोष पाण्डेय, डॉ0 शैलसुता, बीपेंद्र पाण्डेय सहित अन्य छात्र–छात्राएं उपस्थित रही।

अनुशासन के लिए जानी जाती है एनसीसीः कुलपति

02 दिसम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने एन0सी0सी0 कैडेट भर्ती में आये प्रतिभागी छात्रों को 1600 मीटर की रेस के लिए नवीन परिसर में हरी झंडी दिखाई। एन0सी0सी0 भर्ती प्रकिया में प्रतिभागी छात्रों का शारीरिक माप, लिखित परीक्षा एवं फिजीकल टेस्ट लिया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि एनसीसी विंग अनुशासन के लिए जानी जाती है। इससे जुड़े विद्यार्थी राष्ट्रीय सेवा के लिए तैयार किए जाते हैं। आपातकालीन परिस्थितियों में इन्हें महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी दी जाती है। एन0सी0सी0 प्रभारी लेफ्टिनेंट प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने बताया कि एनसीसी कैडेटो का चयन निर्धारित मापदंडों के अनुरूप ही किया जाता है। चयन परीक्षा का परिणाम एक सप्ताह के भीतर जारी कर दिया जाएगा। चयन प्रक्रिया में लगभग 160 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

इसके उपरांत कुलपति प्रो0 रविशंकर ने नवीन परिसर स्थित गेंदालाल दीक्षित गेस्ट हाउस के लॉन में वृक्षारोपण भी किया एवं एम0बी0ए0 विभाग का निरीक्षण कर कक्षाओं के सुचारू रूप से संचालन के लिए आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। इस अवसर पर 65 एनसीसी बटालियन के लेफ्टिनेंट कर्नल प्रसून नाथ, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 जसवंत सिंह, सूबेदार मेजर महावीर सिंह, डॉ0 श्रीश अस्थाना, डॉ0 मुकेश वर्मा, डॉ0 महेन्द्र पाल सिंह, राजीव कुमार, विवेक उपाध्याय, आशीष पटेल, डॉ0 शैलेन्द्र सिंह सहित अन्य उपस्थित रहे।

स्वच्छता अभियान में सभी शिक्षकों की सहभागिता होनी चाहिएः कुलपति

28 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में प्रत्येक शनिवार को स्वैच्छिक श्रमदान एवं साफ–सफाई अभियान के क्रम में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने परिसर के साफ–सफाई अभियान में हिस्सा लिया। कुलपति का साथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ एवं मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने साफ–सफाई कर श्रमदान किया। इसके साथ ही कुलपति प्रो0 सिंह ने परिसर के विभिन्न विभागों का निरीक्षण कर साफ–सफाई का अवलोकन किया। दूसरी तरफ परिसर की महिला शिक्षिकाओं ने भी स्वैच्छिक श्रमदान किया। जिसमें एम0एड0 विभाग की डॉ0 शशि सिंह एवं डॉ0 नीलम सिंह शामिल रही। कुलपति ने दोनों शिक्षिकाओं का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि आधी आबादी का प्रतिनिधित्व कर रही है। निश्चित ही इनकी मेहनत पूरे परिसर में शिक्षिकाओं के लिए एक संदेश जायेगा। इसके साथ ही कुलपति ने आई0ई0टी0 परिसर में भी निरीक्षण किया। वहां उपस्थित शिक्षकों से कहा कि इस अभियान में सभी शिक्षकों की सहभागिता बढ़चढ़ कर होनी चाहिए।

विश्वविद्यालय परिसर में प्रातः 7 बजे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह एवं कुलसचिव उमानाथ के साथ मदन मोहन मालवीय केन्द्रीय पुस्तकालय, सूचना एवं सेवा एवं मंत्रणा केन्द्र, ऋषभदेव शोध–पीठ, कोसल संग्रहालय, पर्यावरण विज्ञान, आचार्य नरेन्द्र देव महिला छात्रावास, राहुल सांकृत्यायन भवन, प्रचेता भवन में जनसंचार एवं पत्रकारिता, शारीरिक शिक्षा एवं यौगिक संस्थान तथा समाज कार्य विभाग का निरीक्षण किया। स्वैच्छिक श्रमदान एवं साफ–सफाई अभियान में स्वच्छता प्रभारी डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 विनय कुमार मिश्र, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 श्रीश अस्थाना, डॉ0 संघर्ष सिंह, डॉ0 आर0एन0 पाण्डेय, इंजीनियर अनुराग सिंह, डॉ0 अनिल कुमार विश्वा, डॉ0 देवेन्द्र वर्मा, डॉ0 संतोष पाण्डेय, डॉ0 दिलीप सिंह, सुरेन्द्र प्रसाद, रामजी, राजीव कुमार, किशुन यादव सहित अन्य ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी पर एफडीपी का आयोजन

05 दिसम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय आईईटी संस्थान में ऑल इंडिया टेक्निकल एजुकेशन द्वारा स्पांसर्ड ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी विषय पर पांच दिवसीय ऑनलाइन फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का 05 दिसम्बर, 2020 को समापन हुआ। समापन सत्र को संबोधित करते हुए निफ्टरऑन कंपनी के को–फाउंडर एवं चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर श्रीलंका के सरमिलन सोमासुंदरम ने बताया कि ब्लाकचेन टेक्नोलॉजी एक ऐसा प्लेटफार्म है जहां स्टेलर एप्लीकेशन का यूज डिसेंट्रलाइज बेस्ड किया जाता है। स्टेलर एप्लीकेशन दूसरे देश में ही नहीं बल्कि इंडिया में भी यूज होता है। उन्होंने बताया कि यह एक अत्यंत आधुनिक तकनीक है। इसके माध्यम से हम अपना प्रोडक्ट और प्रोजेक्ट दोबारा उत्पादित कर सकते हैं।

कार्यक्रम में आईईटी की असिस्टेंट प्रोफेसर शांभवी शुक्ला ने क्रिप्टोग्राफी के माध्यम से ब्लॉकचेन की सिक्योरिटी एवं स्टेनोग्राफी के महत्व को बताया। उन्होंने बताया कि ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिए क्रांतिकारी तकनीक है। इस प्रौद्योगिकी की उत्पत्ति के संबंध में बहुत अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है लेकिन ऐसा माना जाता है कि क्रिप्टो करेंसी को समर्थन देने के लिए ब्लॉकचेन तकनीकी की खोज की गई है। कार्यक्रम के समापन पर संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्रा ने बताया कि ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी से दुनिया एक नए आयाम की तरफ बढ़ सकती है। पांच दिवसीय फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में प्रशांत साहू बेंगलुरु से, आजिंक्य लोहाकरे महाराष्ट्र से, श्रीराम वासुदेवन केरला से, हर्षित भाटिया दिल्ली से, डॉक्टर सुधीर मिश्रा लखनऊ यूनिवर्सिटी ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम की संयोजक आस्था सिंह कुशवाहा ने प्रतिभागी सभी शिक्षकों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग रमेश मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में पारितोष त्रिपाठी, परिमल तिवारी, विनीत सिंह, डॉ0 अनूप श्रीवास्तव, डॉ0 दिनेश कुमार राव एवं दीपक कोरी मौजूद रहे।

स्वस्थ रहकर ही महिलाएं और बालिकाएं सशक्त हो सकती हैः डॉ0 अर्चना

30 नवम्बर। अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा प्रदेश मिशन शक्ति अभियान के तहत वीमेन इम्पवारमेंट थ्रू हेल्दी एण्ड न्यूट्रीशन फूड विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार को संबोधित करती हुई मुख्य वक्ता आचार्य नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या गृह विज्ञान विभाग की डॉ0 अर्चना सिंह ने बताया कि महिलाओं को अपने भोजन में 40 प्रतिशत सब्जियां, 10 प्रतिशत फल, 25 प्रतिशत आनाज और 25 प्रतिशत प्रोटीन शामिल करना चाहिए। इम्युनिटी बूस्टर फूड जैसे अदरक, करी पत्ता, तुलसी, गिलोय, घृतकुमारी, ब्राह्मी के उपयोग को लाभदायक बताया। उन्होंने कहा कि हमें हमेशा मौसमी फल, अधिक पानी और मोटे पीसे आनाज का सेवन करना चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने प्री–बायोटिक और प्रो–बायोटिक पदार्थों के बारे बताया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ रहकर ही महिलाएं और बालिकाएं सशक्त हो सकती है। कार्यक्रम की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने बताया कि आज का वेबिनार मिशन शक्ति के तहत बालिकाओं और महिलाओं को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने पर आधारित है। प्रो0 वर्मा ने अभिभावकों एवं छात्रों को बालिका सुरक्षा शपथ दिलाई।

कार्यक्रम का संचालन उप समन्वयक डॉ0 सिंधु सिंह द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन सेल की सदस्य डॉ0 सरिता द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, डॉ0 महिमा चौरसिया, मनीषा यादव, नीलम मिश्रा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।